सुभाषितरत्नानि

सन्दर्भ- प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक के **संस्कृत-भाग** के **'सुभाषितरत्नानि'** नामक शीर्षक से अवतरित है।

- **भाषासु मुख्या मधुरा दिव्या गीर्वाणभारती।**
  समस्त भाषाओं में मुख्य, मधुर और दिव्य देववाणी (संस्कृतभाषा) है।
- **तस्या हि मधुरं काव्यं तस्मादपि सुभाषितम्।।**
  निश्चित रूप से उसका काव्य मधुर है और उससे भी अधिक (मधुर है उसके) सुन्दर वचन हैं।
- **सुखार्थिनः कुतो विद्या कुतो विद्यार्थिनः सुखम्।**
  सुख चाहनेवाले (व्यक्ति) को विद्या कहाँ और विद्या प्राप्त करनेवाले को सुख कहाँ?
- **सुखार्थी वा त्यजेद् विद्या विद्यार्थी वा त्यजेत् सुखम्।।**
  सुख की इच्छा करनेवाले को विद्या त्याग देनी चाहिए और विद्यार्थी को सुख त्याग देना चाहिए।
- **जल-बिन्दु-निपातेन क्रमशः पूर्यते घटः।**
  जल की बूंद-बूंद गिरने से घड़ा भर जाता है।
- **स हेतुः सर्वविद्यानां धर्मस्य च धनस्य च।।**
  यही समस्त विद्याओं, धर्म और धन का कारण है
  (अर्थात् थोड़ा-थोड़ा करके हो विद्या, धर्म और धन का संचय होता है।)
- **काव्य-शास्त्र-विनोदेन कालो गच्छति धीमताम्।**
  बुद्धिमान् व्यक्तियों का समय काव्य और शास्त्र की चर्चारूपी मनोरंजन में व्यतीत होता है।
- **व्यसनेन च मूर्खाणां निद्रया कलहेन वा।।**
  और मूर्ख व्यक्तियों का (समय) बुरी आदतों, सोने अथवा लड़ाई-झगड़े मे (व्यतीत होता है)।
- **न चौरहार्यं न च राजहार्य**
  न भ्रातृभाज्यं न च भारकारि।
  ऐसा विद्या-धन न चोर द्वारा चुराया जा सकता है, न राजा द्वारा छीना जा सकता है, न भाई द्वारा बाँटा जा सकता है और न हो भारकारक है तथा
- **व्यये कृते वर्द्धत एव नित्यं**
  विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्।
  व्यय करने से नित्य बढ़ता है, जो सब धनों में प्रधान है।
- **परोक्षे कार्यहन्तारं प्रत्यक्षे प्रियवादिनम्।**
  पीठ-पोछे कार्य को नष्ट करनेवाले और सामने प्रिय बोलनेवाले
- **वर्जयेत्तादृशं मित्रं विषकुम्भं पयोमुखम्।।**
  मित्र को वैसे ही त्याग देना चाहिए, जिस प्रकार मुख में या ऊपरी हिस्से में दूधवाले (किन्तु अन्दर) विष के घड़े को (त्याग देते हैं)।
- **उदेति सविता ताम्रस्ताम्र एवास्तमेति च।**
  सूर्य उदय के समय लाल होता है और अस्त होते समय भी लाल होता है।
- **सम्पत्तौ च विपत्तौ च महतामेकरूपता।।**
  महान् पुरुष सम्पत्ति और विपत्ति अर्थात् सुख-दुःख में एक-जैसे होते हैं।
- **विद्या विवादाय धनं मदाय शक्तिः परेषां परिपीडनाय।**
  दुष्ट की विद्या विवाद के लिए, धन अहंकार के लिए और शक्ति दूसरो की पीड़ा पहुँचाने के लिए होती है।
- **खलस्य साधोः विपरीतमेतज्ज्ञानाय दानाय च रक्षणाय।।**
  इसके विपरीत सज्जन की विद्या ज्ञान के लिए, धन दान के लिए और शक्ति दूसरो की रक्षा के लिए होती है।
- **सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः परमापदां पदम्।**
  बिना विचारकर कार्य को नहीं करना चाहिए। अज्ञान परम आपत्तियों का स्थान है।
- **वृणुते हि विमृश्यकारिणं गुणलुब्धाः स्वयमेव सम्पदः।।**
  सोच-विचारकर कार्य करनेवाले व्यक्ति का गुणों की लोभी सम्पत्तियाँ (लक्ष्मी) स्वयं ही वरण करती हैं।
- **वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि।।**
  वज्र से भी कठोर और पुष्प से भी कोमल
- **लोकोत्तराणां चेतांसि को नु विज्ञातुमर्हति।।**

www.gyansindhuclasses.com
www.gyansindhuclasses.com

असाधारण व्यक्तियों के चित्त को कौन जान सकता है?

- **प्रीणाति यः सुचरितैः पितरं सः पुत्रो**
  जो पिता को अच्छे आचरण से प्रसन्न करता है वह पुत्र,
- **यद् भर्तुरेव हितमिच्छति तत् कलत्रम्।**
  जो पति का ही हित चाहती है वह स्त्री
- **तन्मित्रमापदि सुखे च समक्रियं यद्**
  जो सुख और दुःख में समान व्यवहारवाला है वह मित्र
- **एतत्त्रयं जगति पुण्यकृतो लभन्ते।।**
  इन तीनों को संसार में पुण्यशाली लोग ही पाते हैं।

www.gyansindhuclasses.com

- **कामान् दुग्धे विप्रकर्षत्यलक्ष्मीं**
  जो समस्त इच्छाओं को पूर्ण करती है, दरिद्रता को दूर करती है,
- **कीर्तिं सूते दुष्कृतं या हिनस्ति।**
  जो कीर्ति में वृद्धि करती है और पापों को नष्ट करती है।
- **शुद्धां शान्तां मातरं मङ्गलानां**
  शुद्ध, शान्त और सम्पूर्ण कल्याणों की जननी है।
- **धेनुं धीराः सूनृतां वाचमाहुः।।**
  धैर्यवानों (ज्ञानियों) ने सत्य एवं प्रिय वाणी को ऐसी गाय कहा है।
- **व्यतिषजति पदार्थानान्तरः कोऽपि हेतुः**
  पदार्थों को मिलाने वाला कोई आन्तरिक कारण ही होता है।
- **न खलु बहिरुपाधीन् प्रीतयः संश्रयन्ते।**
  निश्चय ही प्रीति (प्रेम) बाह्य कारणों पर निर्भर नहीं करतीः
- **विकसति हि पतङ्गस्योदये पुण्डरीकं**
  जैसे-कमल सूर्य के उदय होने पर ही खिलता है
- **द्रवति च हिमरश्मावुदुगतेः चन्द्रकान्तः।।**
  और चन्द्रकान्त-मणि चन्द्रमा के उदय होने पर ही द्रवित होती (पिघलती) है।
- **निन्दन्तु नीतिनिपुणाः यदि वा स्तुवन्तु**
  नीति में निपुण लोग निन्दा करे या स्तुति (प्रशंसा) करें,
- **लक्ष्मी समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्।**
  लक्ष्मी आए या अपनी इच्छानुसार चली जाए।
- **अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा।**
  चाहे आज ही मृत्यु हो अथवा युगों के बाद हो।
- **न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः।।**
  धैर्यशाली पुरुष न्यायोचित मार्ग से पग भर भी नहीं डोलते हैं, अर्थात् विचलित नहीं होते हैं।
- **ऋषयो राक्षसीमाहुः वाचमुन्मत्तदृप्तयोः।**
  ऋषियों ने उन्मत्त और अहंकारी (व्यक्तियों) की वाणी को राक्षसी वाणी कहा है।
- **सा योनिः सर्ववैराणां सा हि लोकस्य निऋतिः।।**
  वह समस्त वैरो को उत्पन्न करनेवाली और संसार की विपत्ति (का कारण) होती है।

www.gyansindhuclasses.com